IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

आरसी प्र. सिंह विनिबंधक विशेषता

डॉ. कुमारी संध्या
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
बी. आर. ए. बी. यू., मुजफ्फरपुर

प्रवासीजीक मैथिली साहित्यमे प्रकाशित अन्यकृति सभ मे प्रमुख अछि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित आरसी प्रसाद सिंह विनिबंध। आरसी प्रसाद सिंहक गाम एरौत प्रवासीजीक सासुर छलनि आ आरसी बाबू कँ हिनक ससुर सँ मित्रता छलनि। ई आरसी बाबू कँ अपन काव्यगुरु मानैत छलाह। ई एकटा विशिष्ट संयोग अछि जे प्रवासीजी कँ अगस्त्यायनी महाकाव्य पर वर्ष 1981 ई.क साहित्यक अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि जखन की आरसी बाबू कँ सूर्यमुखी कविता संग्रह पर वर्ष 1983 ई.क पुरस्कार प्राप्त भेल।

सम्पूर्ण ग्रंथ कँ प्रवासी जी प्राक्कथन आ परिशिष्टक अतिरिक्त पाँच भाग मे बँटने छथि। परिशिष्ट मे आरसी बाबू द्वारा रचित आ प्रकाशित पोथीक सूची अछि आ संदर्भ मे संदर्भित ग्रंथक सूची। जीवन–वृत, मैथिली कविता कँ आरसी प्रसाद सिंहक अवदान, हिन्दी साहित्य कँ आरसी बाबूक देन, आरसी बाबूक गीति चेतना आ कवि आरसीक राष्ट्र–भावना शीर्षक नामकरण सँ पोथी कँ पाँच भाग मे विभक्त कएल गेल अछि। यद्यपि आरसी बाबूक मैथिली आ हिन्दी साहित्य मिला कऽ कम सँ सत्तर पोथी प्रकाशित छनि । आरसी बाबू सभ तरहक कविता लिखलनि जाहि मे प्रमुख अछि राष्ट्रवाद, प्रकृति प्रेम, युवा वर्गक उत्साह आ हुनका लोकनिक प्रति उद्‌बोधनात्मक स्वर, प्राकृतिक विपदा आदि।

एकटा छोट सन विनिबंध मे आरसी बाबूक एतेक विपुल रचनाक परिचय देब प्रवासी जीक अद्वितीय विद्वता आ कठिन परिश्रमक परिचायक थिक । लेखक स्वयं लिखने छथि–